भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-10, अंक-2-3	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
बुधवार, 25 फर.' 87	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

7 मार्च ...

समय अविराम गति से चलता रहता है। देखते ही देखते प.पू. काकाजी को स्थूल रूप से हमारे बीच से गये 7 मार्च को एक साल पूरा हो गया ! जो-जो उनके संबंध में एक बार भी आया होगा वह उस सौम्यमूर्ति–अखंड मस्ती में रहती दिव्य विभूति को कभी भी भुला नहीं पाया होगा। अनोखी खुमारी से भरी मस्ती वाली चाल, क्रीम सिल्क का कुर्ता, श्वेत धोती, भगवी टाई और भगवी टोपी पहने एक निराला दिव्य व्यक्तित्व लिए देखते ही भा जाती वह मूर्ति आज भी आँखों से ओझल नहीं होती। कभी किसी ने उनके मुख पर उदासीनता, थकावट, निराशा देखी ही नहीं; मुख पर सदैव स्मित, नयनों से अपनत्व भरी छलकती ममता और केवल अक्षरधाम के सुख, शान्ति, आनन्द बांटने की चाहना से वात्सल्यभरी अमृतवाणी थी उनकी। उनका एक ही शब्द 'RIGHT' आज भी चौंका देता है और नादब्रह्म में हमे लीन कर देता है। प.पू. काकाजी की वाणी, दर्शन अब हमें कभी नहीं मिलेगा यह विचार आते ही मन, बुद्धि, शरीर अपना कार्य छोड़कर प्राणहीन जैसे हो जाते हैं। विरह की व्यथा अभी भी सभी को घेरे में लिये है, पर अब इनका ऋण चुकाने का संकल्प और प्रार्थना करते हम आश्वस्त होते हैं।

साधुता की कैसी चरम सीमा या सहजावस्था होगी उनकी कि सब कुछ जानते हुए भी उन्होंने हरेक का दास बनने में ही सच्चा आनंद माना। हमारे साथ हमारे जैसे ही बनकर रहे। किसी को अपनी नैसर्गिकी ब्राह्मीस्थिति की कभी झांकी भी न आने दी। और आज–उनकी आवाज कानों में गुँजा करती है–''दुनियां माने या न माने, तुम तो मानो।'' और हर पल पहले से अधिक दिव्यस्वरूप में प्रगट वे हम सभी को देख रहे हैं कि उनके बलिदान से हमने अपना ढांचा अभी भी बदला या नहीं? हम उनकी बातों को कुछ समझे? यह प्रश्न हरेक को अपने भीतर से पूछना है। उन्होंने तो खूब आशीर्वाद बरसाये.....अभी भी वैसे ही आशीष

बरसा रहे हैं, पर झेलने तो हमें हैं। या अब भी हम अपने मन, इन्द्रियाँ, अन्तःकरण की हल्की वृत्तियों की छतरी ओढ़कर खड़े रहेंगे?

तो, अब हमेशा इस मस्ती में रहें कि अहो हो! मानवस्वरूप में हमने प्रभु को देखा ! उन्होंने हमें अपने मानकर स्वीकार करा !! कैसे लाड़ लड़ाये? बस हमेशा इस संबंध की मस्ती में खोये रहें, अनहद् विरोध, अपमान और मुश्किलों के बावजूद प.पू. काकाजी को बापा का कैसा भरोसा रहा? उनके ही शब्दों में–'मेरा प्रभु मेरे लिए सब कुछ कर देता है; रो-रो कर (चाहे बनावट से भी) माँ को पुकारो। तो, जैसे मां बच्चे के रोने पर कहीं भी हो, लेकिन दौड़ कर आती है; वैसे ही अन्तर से अभीप्सा करके प्रभु को तीव्र पुकार करो–तुम्हारा प्रभु दौड़कर आ जाएगा। मेरे बाप के साथ मेरा telephone लगता है, आपका क्यों नहीं लगता? आप भी technique सीख लो। बन्दर मन को छोड़ो.....सीमित बुद्धि को total तिलाँजलि दे दो। बिल्ली का बच्चा बन जाओ।'

प.पू. काकाजी को भजन खूब प्रिय था। इतना अधिक भजन उन्होंने स्वयं किया है कि उनके भजन से ही तो आज हम सभी उजले हैं।

अब भी अपना समय, उदासी, विक्षेप, खींचातानी, मेरा-तेरा में गवायेंगे तो अक्षरधाम में बैठे अपने प्यारे प्रभु के सामने हम क्या मुँह लेकर जायेंगे? मान-अपमान, अपेक्षा-उपेक्षा की माया से परे का उदात्त दिव्य जीवन प.पू. काकाजी जी गये। हम उनके ही तो माने जाते हैं। बच्चों को तो बाप के कदमों पर चलना चाहिए न? मुझे मेरी गरज से मुक्तों की सेवा करके, व्यापक में प्रभु को निहार कर समर्पित हो जाना है–ऐसी भावात्मक एकता स्थापित करने तीव्र भजन करने हम लग पड़े और उनके बलिदान को अमर बना दें !

☆ ☆ ☆

.....और श्रीजी महाराज ने कहा—

यदि किसी ने हमारा अनुकरण किया तो उसकी जरुर दुर्दशा होगी; क्योंकि हमारे हृदय में तो नारायण प्रगट विराजते है और मैं तो हूँ ही अनादि मुक्त पर किसी के उपदेश से मुक्त नहीं हुआ हूँ। और मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को तो मैं पकड़ लेता हूँ, जैसे सिंह बकरे को पकड़ लेता है। ठीक उसी भाँति अन्तःकरण को मैं पकड़ लेता हूँ। दूसरों को तो अन्तःकरण दिखाई भी नहीं पड़ता। इसलिए मेरा अनुकरण करके उपाधियों के बीच शुद्ध रहना तो नारद सनकादिक जैसों के भी वश की बात नहीं तो दूसरों की तो बात ही क्या?

अनेक मुक्त हो गये और अनेक मुक्त होंगे, पर विषयों के बीच रहने के बावजूद उनसे निर्लिप्त रहा हो ऐसा कोई न हुआ है और न ही होगा। फिलहाल न कोई ऐसा है, न ही कोटि कल्पों तक साधन करके भी कोई ऐसा समर्थ होगा। इसलिए जैसा मैं कहता हूँ वैसा आप करोगे तो भला होगा।

और हम जो किसी को प्यार से बुलाते हैं, वह तो हम उस जीव के श्रेय के लिए बुलाते है, हम किसी की ओर स्नेह से देखते हैं या किसी के आग्रह पर अच्छा भोजन करते हैं या किसी के बिछाये पलंग पर बैठते हैं या किसी के दिए हुए वस्त्रालंकार, पुष्प, माला आदि ग्रहण करते हैं

उसका उद्देश्य हमारा सुख चैन नहीं, बल्कि जीव के श्रेय के लिए है। यदि हम अपने सुख के लिए करते हों तो हमें 'श्री रामानंदस्वामी' की सौगंध है।

इसलिए यूं सोच करके कोई भी हमारा अनुकरण न करे व पञ्च इन्द्रियों के आहार को अति शुद्ध रखियेगा। हमारी यह बात अवश्य ही मानाा। और यह बात तो सभी की समझ में आ जाये ऐसी सुगम है सो सभी की समझ में तुरन्त आ जायेगी। अतः सत्संग में इसे खूब फैलाना। उसमें हमारी बहुत प्रसन्नता मिलेगी। यूं बात करके श्रीजी महाराज 'जय सच्चिदानंद' कह कर अपने उतारे में पधारे।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-18
बुधवार, 7 दिसम्बर 1819

☆☆☆

स्वामी की बातें

81. पाँच प्रकार से स्त्री को भोगी जाती है—त्वचा से, नेत्र द्वारा, कान द्वारा, जिह्वा द्वारा और मन में संकल्प से। **प्र-2,53**

82. 'सत्संग में मैं भी सबके बराबर हूँ' ऐसा समझना नहीं, अपने आपको ऐसा (समकक्ष) समझना, यह ही कमी है। **प्र- 2, 54**

83. संत कहे वैसा करना श्रेष्ठ है और अपनी मनमानी करना कनिष्ठ है। महात्यागी हो, सारे मन्दिर का काम अकेले करता हो और अनेकों को सत्संग कराता हो, किन्तु अपना मनमाना व्यवहार करता हो तो वह न्यून है और उसे कभी न कभी विघ्न आ सकती है। दूसरा तीन टाने खाने खाता हो, आलसी हो और सोता ही रहता हो, किन्तु अपनी मनमानी छोड़ कर संत के कहने पर चलता हो तो वह उससे अधिक है।

    संत कहें वैसा करना निर्गुण है और मनमानी करना सगुण है। और ये त्यागी बैठे हैं उनमें भी आधे तो मनमानी करते होंगे व कई गृहस्थ भी मनमानी करते हैं। जिसका दश जने प्रमाण करें वे सही माने जाते हैं पर एक का कहा प्रमाण नहीं माना जाता।

प्र-2, 57

84. जैसा दूसरों को समझा देने का आग्रह रहता है वैसा ही स्वयं समझ लेने का रखें और जैसा आग्रह दूसरों के दोष देखने का रहता है वैसा ही अपने दोष टालने का हो तो, किसी भी प्रकार की कसर रहेगी ही नहीं।

प्र-2,61

85. शास्त्र में लिखा है और सत्पुरुष भी कहते हैं कि—यदि बड़े संत प्रसन्न हो जायें, तो सारे कार्य सम्पन्न हो जायें। बड़े संत को राजी करने के चार उपाय हैं—

    1. इनको जो पदार्थ चाहिए वह देना,
    2. इनकी देह की सेवा करना,
    3. इनके पास हाथ जोड़ कर विनय करना और
    4. उनकी अनुवृत्ति !

    अनुवृत्ति में तो सभी बातें आ जाती हैं। अनुवृत्ति जैसा अन्य कुछ नहीं है।

प्र-2,62

ब्रह्मप्रवाह.....

प्रगट के उपासकों के लिए–आपस-आपस की भावना में फर्क पड़ जाये (मन में बदलवा आ जाये) यही **'वासना'** है और सच्चे भगवदी व जिसके द्वारा प्रगटस्वरूप की महिमा समझी हो उसके प्रति मन में बदलवा आ जाये या उसका अभाव आवे यही जीव का मूलभूत **'स्वभाव'** या **'प्रकृति'** है–जो कि बड़े संत के केवल अनुग्रह के सिवा टल ही नहीं सकती।

अतः ऐसे संत का समागम व सेवा या प्रसंग कर लेने की लगन व गरज रखनी।

आत्यंतिक कल्याण एवं इसी जीवन में अक्षरधाम का दिव्यसुख प्राप्त करने का यही सर्वोत्तम साधन है। गुरुकृपा से आज यह सुगम है, तो ऐसा अनुपम लाभ करोड़ों काम बिगाड़ कर भी ले लेना।

प.पू. काकाजी महाराज 11-9-1966

Statement about Ownership and other particulars about newspaper

'भगवत-कृपा'— 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, A-103, Ashok Vihar, Ph-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sadhu Mukund Jivandas
Nationality	:	Indian
Address	:	Yogi Divine Society, A-103, Ashok Vihar, Ph-III, Delhi-52
4. Publisher's Name, Nationality		
Address	:	As above
5. Editor's Name	:	
Nationality	:	
Address	:	As above
6. Owner' Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	

I, Sadhu Mukundjivandas, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/- **Sadhu Mukundjivandas**

Date: 25th Feb., 1987 Signature of Publisher

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 14.3.87	शनिवार	पू. भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन
2.	दि. 15.3.87	रविवार	होली
3.	दि. 16.3.87	सोमवार	धूलेड़ी, भगवत्स्वरूप प.पू. साहेब का प्राकट्य दिन
4.	दि. 25.3.87	बुधवार	एकादशी, व्रत
5.	दि. 7.4.87	मंगलवार	श्री रामनौमी, व्रत–भगवान स्वामिनारायण जयंती
6.	दि. 10.4.87	सोमवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED By SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P.,Printers, Shahdara, Delhi-110 032